शाला संचालन की व्यवस्था

आम तौर पर देखा जाता है कि शाला संचालन की जिम्मेंदारी किसी एक व्यक्ति की होती है या फिर किसी एक व्यक्ति की देख रेख में एक समूह द्वारा इस कार्य को किया जाता है। उदय पाठशालाओं में इस कार्य के लिये अलग से कोई व्यक्ति नहीं होता है। पाठशाला से संबंधित सभी व्यक्ति इस कार्य को देखते हैं। ये कहें कि सभी आपस में मिलजुल कर शाला संचालन करते हैं।

इस काम में मुख्य रूप से ग्राम समुदाय, अभिभावक, शिक्षक और बच्चे सक्रिय रूप से अपना सहयोग करते हैं। बच्चों के स्तर पर बाल पंचायत का गठन किया गया है जो पाठशाला में पढ़ने वाले सभी बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है। बाल पंचायत अपने सभी कार्य बालसभा में तय करती है। जिसमें बच्चों से संबंधित मसले जैसे विद्यालय का समय क्या रहेगा? साफ–सफाई, लेट आने वाले बच्चों से बातचीत करना, बच्चों के आपसी झगड़े निपटाना, साफ–सफाई, पेड़ पौधे, शिक्षण सामग्री की सुरक्षा करना, समाचार पत्र निकालना व अनेक सामुहिक मसलों पर चर्चा करना।

इसी प्रकार एक टीम शिक्षकों की होती है। जो आपस में मिलजुल कर काम करती है। इनमें कोई प्रधानाध्यापक नहीं होता है। सभी शिक्षक आपस में चर्चा कर तय करते हैं जैसे स्टोर की देखभाल कौन करेगा? एस.आर. रजिस्टर पूरा करना, समुदाय मिटिंग करना, नये समुदायों से बातचीत करना, कौन शिक्षक किस समूह को पढ़ायेगा, बाल पत्रिका का निकलना, मोरंगे की बैठक में जाना, अनुशासन संबंधी नियम बनाना और उनको लागू करना।

समुदाय के साथ भी एक टीम होती है। जिसमें एक दो शिक्षक और समुदाय के लोग होते हैं। जिनका चयन भी समुदाय बैठक में ही किया जाता है। यह समूह शाला संचालन समिति के रूप में काम करता है। जिसका काम पाठशाला की सम्पूर्ण गतिविधियों में परामर्श देना, बच्चों, शिक्षकों व विद्यालय से संबंधित समस्याओं पर विचार करना, समिति द्वारा लिये गये निर्णयों का क्रियान्वयन करना जैसे निर्माण कार्य, साफ–सफाई, शैक्षिक सुधार, वार्षिक उत्सव, बच्चों की शैक्षणिक प्रगति, मुल्यांकन आदि मसलों पर सामूहिक निर्णय लिया जाता है।

इस प्रकार तीन स्तरों पर आपसी विचार विमर्श द्वारा शाला संचालन कार्य किया जाता हैं। इसमें बच्चों से जुड़े मसले बच्चों

की पंचायत में हल किये जाते हैं। शिक्षकों से जुड़े मसले शिक्षकों की बैठक में हल किये जाते हैं। और समुदाय से जुड़े मसले समुदाय बैठकों में हल होते हैं। कभी–कभी एक ही मसले को तीनों मंचों पर चर्चा के लिये रखा जाता है। इस कार्य में शिक्षक अकसर केन्द्रिय भूमिका में रहता है। जो इन बैठकों में लिये गये निर्णयों को लागू करने उन पर अमल करने व उनके अनुसार कार्य करने और व्यवस्था बनाए रखने का कार्य करता है।

इस प्रकार उदय सामुदायिक पाठशालायें शिक्षक बच्चों और समुदाय के द्वारा संचालित होती हैं। जो सम्पूर्ण इकाई के रूप में कार्य करती हैं।

शाला संचालन की व्यवस्था